JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

साधारणीकरण

साधारणीकरण

साधारणीकरण का अर्थ है – असाधारण का साधारण या विशेष का निर्विशेष हो जाना | कवि और पाठक की चित्तवृत्तियों का एकतान या एकलय हो जाना अथवा दोनों में 'मैं' 'पर' के द्वैध का दूर हो जाना साधारणीकरण है |

जैसे – मंच पर चल रहे यशोदा – कृष्ण के प्रसंग में यशोदा कृष्ण के प्रति वात्सल्य भाव का अनुभव करती है और इस नाटक को देखने वाले दर्शक भी उसी वात्सल्य भाव का अनुभव करते हैं | अर्थात् कृष्ण केवल यशोदा के पुत्र न रहकर सबको अपने पुत्र प्रतीत होने लगते हैं | यही साधारणीकरण है |

साधारणीकरण

'साधारणीकरण' से संबंधित प्रमुख व्याख्याकार एवं उनके मत

1 भट्टनायक

आचार्य भट्टनायक ने 'भावकत्व' को साधारणीकरण माना है | उनके अनुसार–

"भावकत्वं साधारणीकरणं | तेन ही व्यापारेण विभावादय: स्थायी च साधारणी क्रियन्ते |"

अर्थात् भावकत्व ही साधारणीकरण है | इस व्यापार से विभावादि और स्थायी – भावों का साधारणीकरण होता है | साधारणीकरण से पहले दर्शक दुष्यंत, शकुंतला आदि को व्यक्ति विशेष के रूप में ही ग्रहण करता है, किन्तु साधारणीकरण के पश्चात् इनका विशेषत्व समाप्त हो जाता है तथा वे सामान्य प्रतीत होने लगते हैं |

साधारणीकरण

2 अभिनवगुप्त -

इनके अनुसार विभावादि के स्थायीभाव का साधारणीकरण होता है | साथ ही, उनके अनुसार सामाजिक की अनुभूति का भी साधारणीकरण होता है | अभिनवगुप्त के अनुसार साधारणीकरण के दो स्तर माने जाते हैं–

1. पहले स्तर पर विभाव आदि का व्यक्ति विशिष्ट संबंध टूट जाता है |
2. दूसरे स्तर पर सामाजिक (दर्शक) का व्यक्तित्व बंधन नष्ट हो जाता है |

साधारणीकरण

3 आचार्य विश्वनाथ –

विश्वनाथ के अनुसार –

"परस्य न पस्येति ममेति न ममेति च |
तदास्वादे विभावादे: परिच्छेदो न विद्यते ||"

अर्थात् विभावादि का अपने पराये की भावना से मुक्त हो जाना साधारणीकरण है | विभावादि के संबंध में ये मेरे हैं अथवा ये मेरे नहीं हैं, दूसरे के हैं अथवा दूसरे के नहीं हैं, इस प्रकार का विशेषीकरण नहीं होता है |

साधारणीकरण

4 जगन्नाथ -

पं. जगन्नाथ का यह मत है कि न साधारणीकरण कोई वस्तु है और न किसी का किसी का किसी के साथ साधारणीकरण होता है | काव्यानुभूति भ्रमजनित है |

5 आचार्य रामचंद्र शुक्ल –

शुक्लजी ने आलंबन धर्म का साधारणीकरण होना कहा है | आलंबन का अर्थ है – भाव का विषय | भाव का साधारणीकरण इस प्रकार होता है कि पहले वह कवि के भाव का विषय बनता है फिर समस्त सहृदयों के भाव का विषय बनता है |

साधारणीकरण

6 डॉ. नगेन्द्र –

इन्होंने कवि की अनुभूति का साधारणीकरण माना है | इनके मत में निम्न बिंदु हैं –

1. साधारणीकरण कवि की अपनी अनुभूति का होता है | अर्थात् जब कोई व्यक्ति अपनी अनुभूति को इस प्रकार अभिव्यक्त कर सकता है कि वह सब के हृदय में समान अनुभूति जगा सके तो उसमें साधारणीकरण की शक्ति विद्यमान है | कवि को लोक हृदय की पहचान होती है | इसलिए वह किसी विषय को इस रूप में प्रस्तुत करता है जिससे कि सबकी अनुभूति को जगा सके |

2. विषय का रूप तो अज्ञात ही रहता है किन्तु कविगण अपनी – अपनी भावना के अनुरूप उसका वर्णन करते हैं | कवि की इसी भावना का साधारणीकरण होता है | पाठक भी कवि की साधारणीकृत भावना का आस्वादन करता है |

साधारणीकरण

सारांश – उपर्युक्त सभी मतों के आधार पर साधारणीकरण में सारांशत: निम्न तीन बातों का समावेश किया जा सकता है–

1. साधारणीकरण आलंबनत्व धर्म का होता है |
2. साधारणीकरण कवि की अनुभूति का होता है |
3. साधारणीकरण सहृदय पाठक या श्रोता के चित्त का होता है |

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता . गेवराई जि . बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर